पौराणिक शतरुद्रिय

यजुर्वेदोक्त शतरुद्रिय का परायण सभी लोग नहीं कर सकते। अत: यहाँ पर भर्तृयज्ञ मुनि द्वारा इन्द्रद्युम्न आदि भक्तों को महीसागरसंगम तीर्थ में जिस शतरुद्रिय का उपदेश दिया गया था, उसे लिख रहे हैं। इसे हम पौराणिक शतरुद्रिय कह सकते हैं क्योंकि यह उपदेश स्कंदपुराण के अन्तर्गत पाया जाता है। इस शतरुद्रिय का पाठ सभी लोग कर सकते हैं। यहाँ पर पुराणगत शतरुद्रिय के उपदेश को यथावत् लिख रहे हैं।

भर्तृयज्ञ इन्द्रद्युम्न आदि भक्तों से कहते हैं – यह सर्वथा सत्य है कि जो भगवान् शंकर को छोड़कर अन्य किसी भी वस्तु की उपासना करता है वह हाथ में रक्खे हुए अमृत को त्यागकर मृगतृष्णा की ओर दौड़ रहा है। यह सम्पूर्ण जगत् शिवशक्तिस्वरूप है; यह बात प्रत्यक्ष देखी जाती हैं; क्योंकि कुछ प्राणी पुँल्लिङ्ग के चिन्हों से युक्त हैं और कुछ स्त्रीलिङ्ग के चिन्हों से युक्त हैं। जो पुरुषचिन्ह से युक्त हैं वे शिवस्वरूप हैं तथा जिनमें स्त्रीलिङ्गसूचक चिन्ह हैं वे सब शक्तिस्वरूप हैं। भगवान् रुद्र का उत्तम माहात्म्य 'शतरुद्रिय' के नाम से प्रसिद्ध है।

मनुष्य यदि अपने पाप धोना चाहते हैं तो उन्हें उसका नियमपूर्वक श्रवण या पाठ करना चाहिये। वह इस प्रकार है – ब्रह्माजी भगवान् शिव के सुवर्णमय लिङ्ग की आराधना करके उसके **जगत्प्रधान** (1) नाम का जप करते हुए, अपने पद पर विराजमान हैं। श्रीकृष्ण ने स्थल – भाग में काले पत्थर का शिवलिङ्ग स्थापित करके **ऊर्जित** (2) नाम से उसकी आराधना की है। सनकादि महर्षियों ने अपने हृदयरूपी लिङ्ग का **जगद्गति** (3) नाम से पूजन करके अपना अभीष्ट साधन किया है। सप्तर्षियों ने दर्भाङ्कुरमय लिङ्ग का **विश्वयोनि** (4) के नाम से पूजन किया है। देवर्षि नारद आकाश में ही शिवलिङ्ग की भावना करके उसे **जगद्बीज** (5) नाम देकर उसकी आराधना करते हैं। देवराज इन्द्र वज्रमय लिङ्ग की **विश्वात्मा** (6) नाम से पूजा करते हैं। सूर्यदेव ताम्रमय लिङ्ग की पूजा और उसके **विश्वसृग्** (7) नाम का जप करते हैं। चन्द्रमा मुक्तामय लिङ्ग की उपासना और उसके **जगत्पति** (8) नाम का जप करते रहते हैं। अग्निदेव इन्द्रनीलमणि के शिवलिङ्ग की पूजा करते हुए उसके **विश्वेश्वर** (9) नाम का जप करते हैं। बृहस्पतिजी पुखराज मणि के शिवलिङ्ग की आराधना और उसके **विश्वयोनि** (10) नाम का जप किया करते हैं। शुक्राचार्य **विश्वकर्मा** (11) नाम से प्रसिद्ध पद्मराग मणिमय शिवलिङ्ग की उपासना करते हैं। धनाध्यक्ष कुबेर सुवर्णमय लिङ्ग की पूजा और उसके **ईश्वर** (12) नाम का जप करते हैं। विश्वेदेवगण **जगद्गति** (13) नाम से प्रसिद्ध रजतमय शिवलिङ्ग की पूजा करते हैं। यमराज पित्तल के शिवलिङ्ग की पूजा और उसकी **शम्भु** (14) नाम से उपासना करते हैं। वसुगण काँसे के शिवलिङ्ग की आराधना और उसके **स्वयम्भू** (15) नाम का जप करते हैं। मरुद्गण त्रिविध लोहमय लिङ्ग की पूजा और **उमेश या भूतेश** (16) नाम का जप करते हैं। राक्षस लोहमय लिङ्ग की उपासना और **भूतभव्यभवोद्भव** (17) नाम का जप करते हैं। गुह्यकगण

शीशे के शिवलिङ्ग की पूजा और **योग**(18) नाम का जप करते हैं। जैगीषव्य मुनि ब्रह्मरन्ध्रमय शिवलिङ्ग की उपासना और **योगेश्वर**(19) नाम का जप करते हैं। राजा निमि सबके युगल नेत्रों में ही शिवलिङ्ग की भावना करके उसकी आराधना करते और **शर्व**(20) नाम जपते रहते हैं। धन्वन्तरि **सर्वलोकेश्वरेश्वर**(21) नाम से प्रसिद्ध गोमयलिङ्ग की उपासना करते हैं। गन्धर्वगण लकड़ी के शिवलिङ्ग की पूजा और उसके **सर्वश्रेष्ठ**(22) नाम का जप करते हैं। श्रीरामचन्द्रजी **ज्येष्ठ**(23) नाम का जप करते हुए वैदूर्यमय शिवलिङ्ग की पूजा करते हैं। बाणासुर मरकतमणिमय शिवलिङ्ग की पूजा और **वाशिष्ठ**(24) नाम का जप करते हैं। वरुणजी **परमेश्वर**(25) नाम से प्रसिद्ध स्फटिकमणिमय शिवलिङ्ग की पूजा करते हैं।

नागगण मूँगे के शिवलिङ्ग की उपासना और **लोकत्रयङ्कर**(26) नाम का जप करते हैं। सरस्वती देवी शुद्धमुक्तामय शिवलिङ्ग को पूजती और **लोकत्रयाश्रित**(27) नाम का जप करती हैं। शनिदेव शनिवार की अमावास्या को आधी रात के समय महीसागरसंगम में आवर्त(भँवर) मय शिवलिङ्ग की पूजा और **जगन्नाथ**(28) नाम का जप करते हैं। रावण चमेली के फूल का शिवलिङ्ग बनाकर पूजा करता और **सुदुर्जय**(29) नाम का जप करता है। सिद्धगण मानसलिङ्ग की उपासना और **काममृत्युजरातिग**(30) नाम का जप करते हैं। राजा बलि यज्ञमय लिङ्ग की आराधना और उसके **ज्ञानात्मा**(31) नाम का जप करते हैं। मरीचि आदि महर्षि पुष्पमय शिवलिङ्ग की उपासना और **ज्ञानगम्य**(32) नाम का जप करते हैं। सत्कर्म करनेवाले देवता शुभ कर्ममय लिङ्ग को पूजते और **ज्ञानज्ञेय**(33) नाम का जप करते हैं। फेन पीकर रहनेवाले महर्षि फेनिज लिङ्ग की उपासना और **सुदुर्विद** (34) नाम का जप करते हैं। कपिलजी **वरद**(35) नाम का जप करते हुए बालुकामय शिवलिङ्ग की पूजा करते हैं। सरस्वतीपुत्र सारस्वत मुनि वाणी में शिवलिङ्ग की उपासना करते हुए **वागीश्वर**(36) नाम का जप करते हैं। शिवगण भगवान् शिव के मूर्तिमय लिङ्ग की उपासना करते हुए **रुद्र**(37) नाम का जप करते हैं। देवतालोग जाम्बूनद सुवर्णमय लिङ्ग की आराधना और **शितिकण्ठ**(38) नामका जप करते हैं। बुध **कनिष्ठ**(39) नाम का जप करते हुए शङ्खमय शिवलिङ्ग की पूजा करते हैं। दोनों अश्विनीकुमार **सुवेधा**(40) नाम से प्रसिद्ध मृत्तिकामय (पार्थिव) शिवलिङ्ग की पूजा करते हैं। गणेशजी आटे का शिवलिङ्ग बनाकर **कपर्दी**(41) नाम से उसकी उपासना करते हैं। मंगल मक्खन के शिवलिङ्ग की **कराल**(42) नाम से उपासना करते हैं। गरुड़जी ओदनमय शिवलिङ्ग की **हर्यक्ष**(43) नाम से उपासना करते हैं। कामदेव गुड़ के शिवलिङ्ग की **रतिद**(44) नाम से उपासना करते हैं। शचीदेवी लवणमय(सैन्धव अथवा सुन्दर रूपमय) शिवलिङ्ग की आराधना तथा **बभ्रुकेश**(45) नाम का जप करती हैं। विश्वकर्मा प्रासादमय(महल के आकार का) शिवलिङ्ग बनाकर **याम्य**(46) नाम से उसकी उपासना करते हैं। विभीषण धूलिमय शिवलिङ्ग की पूजा और **सुहृत्तम**(47) नाम का जप करते हैं। राजा सगर वंशाङ्कुरमय शिवलिङ्ग की पूजा और **संगत**(48)

नाम का जप करते हैं। राहु हींगमय लिङ्ग की उपासना और **गम्य**(49) नाम का कीर्तन करते हैं। लक्ष्मीदेवी लेप्य लिङ्ग का पूजन तथा **हरिनेत्र**(50) नाम का जप करती हैं।

योगी पुरुष सर्वभूतस्थ लिङ्ग की उपासना और **स्थाणु**(51) नाम का जप करते हैं। मनुष्य नानाविध लिङ्ग का पूजन और **पुरुष**(52) नाम का जप करते हैं। नक्षत्र तेजोमय लिङ्ग का पूजन तथा **भग और भास्वर**(53) नाम का जप करते हैं। किन्नरगण धातुमय लिङ्ग का पूजन तथा **सुदीप्त**(54) नाम का जप करते हैं। ब्रह्मराक्षसगण अस्थिमय लिङ्ग का पूजन और **देवदेव**(55) नाम का जप करते हैं। चारणलोग दन्तमय लिङ्ग का पूजन तथा **रंहस**(56) नाम का जप करते हैं। साध्यगण सप्तलोकमय लिङ्ग का पूजन और **बहुरूप**(57) नाम का जप करते हैं। ऋतुएँ दूर्वाङ्कुरमय लिङ्ग का पूजन और **सर्व**(58) नाम का जप करती हैं। अप्सराएँ कुङ्कुम लिङ्ग का पूजन और **आभूषण**(59) नाम का जप करती हैं। उर्वशी सिन्दूरमय लिङ्ग का पूजन और **प्रियवासन**(60) नाम का जप करती हैं। गुरु ब्रह्मचारी लिङ्ग का पूजन और **उष्णीवी**(61) नाम का जप करते हैं। योगिनियाँ अलक्तक् लिङ्ग का पूजन और **सुवभ्रुक्**(62) नाम का जप करती हैं। सिद्ध योगिनियाँ श्रीखण्ड लिङ्ग का पूजन, और **सहस्राक्ष**(63) नाम का जप करती हैं। डाकिनियाँ मांसमय लिङ्ग का पूजन तथा उसके **सुमीढुष्**(64) नाम का जप करती हैं। मनुगण **गिरिश**(65) नाम से प्रसिद्ध अन्नमय लिङ्ग का पूजन करते हैं। अगस्त्य मुनि व्रीहिमय लिङ्ग का पूजन और **सुशान्त**(66) नाम का जप करते हैं। देवल मुनि यवमय लिङ्ग का पूजन और **पति**(67) नाम का जप करते हैं। वाल्मीकि मुनि वाल्मीक लिङ्ग का पूजन और **चीरवासा**(68) नाम का जप करते हैं। प्रतर्दनजी वाणलिङ्ग का पूजन और **हिरण्यभुज**(69) नाम का जप करते हैं। दैत्यगण राई के शिवलिङ्ग का पूजन और **उग्र**(70) नाम का जप करते हैं। दानवलोग निष्पावज लिङ्ग का पूजन और **दिक्पति**(71) नाम का जप करते हैं। बादल नीरमय लिङ्ग का पूजन तथा **पर्जन्य**(72) नाम का जप करते हैं। यक्षराज माषमय लिङ्ग का पूजन और **भूतपति**(73) नाम का जप करते हैं। पितृगण तिलमय लिङ्ग का पूजन और **वृषपति**(74) नाम का जप करते हैं। गौतम मुनि गोधूलिमय लिङ्ग का पूजन और **गोपति**(75) नाम का जप करते हैं।

वानप्रस्थगण फलमय लिङ्ग का पूजन और **वृक्षावृत**(76) नाम का जप करते हैं। स्वामी कार्तिकेय पाषाण-लिङ्ग का पूजन और **सेनान्य** (77) नाम का जप करते हैं। अश्वतर नाग धान्यमय लिङ्ग का पूजन और उसके **मध्यम** (78) नाम का जप करते हैं। यज्ञकर्ता पुरुष पुरोडाशमय लिङ्ग का पूजन और **स्रुवहस्त** (79) नाम का जप करते हैं। यम कालायसमय (कृष्ण लौहमय) लिङ्ग का पूजन और **धन्वी** (80) नाम का जप करते हैं। परशुरामजी यवाङ्कुरलिङ्ग का पूजन तथा **भार्गव**(81) नाम का जप करते हैं। पुरूरवा घृतमय लिङ्ग का पूजन और **बहुरूप**(82) नाम का जप करते हैं। श्रीमान्धाता शर्करामय लिङ्ग की **बाहुयुग**(83) नाम से आराधना करते हैं। गायें पयोमय 'दुग्धमय' लिङ्ग का पूजन और

नेत्रसहस्रक(84) नाम का जप करती हैं। पतिव्रता स्त्रियाँ भर्तृमय लिङ्ग का पूजन तथा **विश्वपति**(85) नाम का जप करती हैं। नर-नारायण मौञ्जीमय शिवलिङ्ग का **सहस्रशीर्ष**(86) नाम से आराधना करते हैं। पृथु **सहस्रचरण**(87) नामवाले तार्क्ष्यलिङ्ग का पूजन करते है। पक्षी **सर्वात्मक**(88) नाम से व्योमलिङ्ग का पूजन करते हैं। पृथ्वी गन्धमय लिङ्ग का पूजन और उसके **द्वितनु**(89) नाम का जप करती हैं। पाशुपतगण भस्ममय लिङ्ग का पूजन और उसके **महेश्वर**(90) नाम का जप करते हैं। ऋषि ज्ञानमय लिङ्ग की **चिरस्थान**(91) नाम से उपासना करते हैं। ब्राह्मण ब्रह्मलिङ्ग की **ज्येष्ठ**(92) नाम से उपासना करते हैं। शेषनाग गोरोचनमय लिङ्ग का पूजन और **पशुपति**(93) नाम का जप करते हैं। वासुकिनाग विषलिङ्ग का पूजन और **शङ्कर**(94) नाम का जप करते हैं। तक्षकनाग कालकूटमय लिङ्ग का पूजन तथा **बहुरूप**(95) नाम का जप करते हैं। कर्कोटकनाग हालाहलमय लिङ्ग का पूजन और **पिङ्गाक्ष**(96) नाम का जप करते हैं। शृङ्गी विषमय लिङ्ग का पूजन तथा **धूर्जटि**(97) नाम का जप करते हैं। पुत्र पितृमय लिङ्ग का पूजन और **विश्वरूप**(98) नाम का जप करता है। शिवादेवी पारदमय लिङ्ग का पूजन और **त्र्यम्बक**(99) नाम का जप करती हैं। मत्स्य आदि जीव शस्त्रमय लिङ्ग का पूजन तथा **वृषाकपि**(100) नाम का जप करते हैं।

इस प्रकार बहुत कहने से क्या लाभ, संसार में जो-जो जीव किसी विलक्षण विभूति से युक्त हैं, उनकी यह विशेषता भगवान् शिव की आराधना के प्रभाव से ही हुई है। यदि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति का विचार बुद्धि में आता हो तो भगवान् शिव की भलीभाँति आराधना करनी चाहिये; क्योंकि त्रिलोकी में वे ही मनोवाञ्छित वस्तु देनेवाले माने गये हैं। जो प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर इस शतरुद्रिय का पाठ करेगा, उसपर प्रसन्न हो भगवान् शिव उसे सभी मनोवाञ्छित वर प्रदान करेंगे। पृथ्वी पर इससे बढ़कर परम पवित्र दूसरी कोई वस्तु नहीं है। यह सम्पूर्ण वेदों का रहस्य है। भगवान् सूर्य ने मुझे(भर्तृयज्ञ को) इसका उपदेश दिया था। शतरुद्रिय का पाठ करने पर मन, वाणी और क्रिया द्वारा आचरित पापों का नाश हो जाता है। जो शतरुद्रिय का जप करता है, वह रोगातुर हो तो रोग से छूट जाता है, कारागार में बँधा हुआ हो तो बन्धन से छुटकारा पा जाता है और भयभीत हो तो भय से मुक्त हो जाता है। इन सौ नामों का उच्चारण करके जो विद्वान् उतने ही फूलों द्वारा भगवान् शिव की पूजा करता है और सौ बार उन्हें प्रणाम करता है, वह सब पातकों से मुक्त हो जाता है। ये सौ लिङ्ग, सौ इनके उपासक और सौ इन लिङ्गों के नाम ये सभी सम्पूर्ण दोषों का नाश करनेवाले माने गये हैं। शिवलिङ्गों के समक्ष जो इस शतरुद्रिय का पाठ करेगा, वह पञ्चविषयजनित दोषों से मुक्त हो जायगा।

(संक्षिप्त स्कन्दपुराणांक-माहेश्वरखण्ड-कुमारखण्ड, गीताप्रेस, गोरखपुर, पृ. 100-102)

❁❁❁❁❁❁